प्राक्कथन

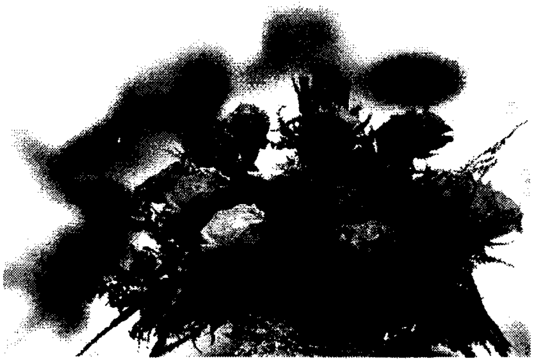

प्राक्कथन

मानवी अनुभूती या स्वयं की अनुभूति को ही साहित्यकार साहित्य में अभिव्यक्ति करता रहता है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने अपने नीजी अनुभव तथा परिवेश में घटित घटना, व्यक्ति के जीवन में चले संघर्ष, उसकी इच्छा, भाव-भावना को साहित्य में व्यक्त कर सर्वहारा को साहित्य में न्याय दिलाने के लिए आगे आये। उन्होंने हर अन्याय के विरूद्ध अपने साहित्य द्वारा आवाज उठायीं अन्याय के विरूद्ध उनका साहित्य जनचेतना में विद्रोह करने के लिए विद्रोही वृत्ति का निर्माण करता चला, इसमें प्रेमचंद, यशपाल, मुक्तिबोध, हरिऔध, जैनेंद्र, जयशंकर प्रसाद, मन्नू भंड़ारी, अज्ञेय, नागार्जुन आदि जैसे साहित्यकारों ने अनेक विधाओं से समाज को युक्त ऐसा साहित्य लिखा। मानव ने निर्माण की गई दी जातियाँ पुरूष और स्त्री में भिन्नता भाव न रखते हुए दोनों ने एक दुजे का साथ निभाकर समताधिष्ठित समाज का निर्माण करना चाहिए तभी मानव की प्रगति होकर वही सुखी जीवन जी सकता है। स्त्री के प्रति अन्याय-अत्याचार के परिणाम स्वरूप परिवार के विघटन की नींव डाली जाती है और उसके परिणाम पुरूष जाति को ही अनंत काल तक भूगदने पड़ते हैं। उसमें वह तहस-नहस हो जाता है। आदि विचारों से युक्त साहित्य निर्माण करानेवाले नारी के प्रति समान दृष्टि से देखने वाले सशक्त रचनाकार तथा प्रबुद्ध चिंतक शिवप्रसाद सिंह हिंदी के एक महान समीक्षक, साहित्यिक तथा आलोचक रहे हैं। समाज में स्त्री-पुरूष, उच-नीच, गरीब-अमीर आदि भाव न रखते हुए सबके प्रति मानवता भाव रखना चाहिए और समताधिष्टित समाज का निर्माण उसके पीछे उद्देश्य रहे है। शिवप्रसाद नारी, गरीब, पीड़ीत, दलित, शोषित के प्रति सहानुभूति जताने वाले सर्वहरा के लेखक या साहित्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं।

विषय चयन एवं प्रेरणा :

हर साहित्यकार की कुछ एक विशेषता या खामियाँ हमें उनका साहित्य पढ़ने पर परिलक्षित होती है। हर साहित्यकार किसी न किसी घटना को लेकर लिखता रहता है। हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों ने मानवी जीवन के हर पहलू को अपने साहित्य में उतारा है। शिवप्रसाद सिंह जी उनमें से एक रहे हैं वे सर्वसामान्य के शोषण को आवाज देते हैं। वे दब्बे हुए शोषित को न्याय दिलाने में अपने लेखनी से समाज की विकृत मानसिकता मुल्यहीनता के विरूद्ध आवाज उठाकर उन्हें सही तरिके से जीवन जीने के लिए प्रेरित करने में उनका साहित्य प्रयत्नशील है। हर विधा में अपनी लेखनी की अद्‌भूत शक्ति चलाने वाले शिवप्रसाद सिंह कहानी विधा साहित्यकार के रूप में पहचाने जाते हैं। बी.ए. की उपाधि के समय हमारे विश्वविदयालय ने बी.ए. के पाठयक्रम में रखी 'कर्मनाशा की हार' कहानी मैंने पढ़ी और मेरा मन उनके कहानी साहित्य की ओर में प्रेरित होता गया। एम्. फिल्. में आने के बाद हमारे हिंदी विभाग के अध्यक्ष अर्जुन चव्हाण जी ने मुझे शिवप्रसाद के साहित्य को पढ़ने के लिए प्रेरित किया। साथ ही आदरणीय गुरूवर्या प्रा.डॉ.आशा मणियार जी के मार्गदर्शन पर मैं शिव जी के कहानी साहित्य को पढ़ाता गया। पढ़ते समय मुझे यही ज्ञात हुआ कि शिव जी ने नारी के अन्याय, अत्याचार, शोषण को अपनी कहानियों में उतारकर हमें नारी के प्रति सोचने के लिए बाध्य किया है। अत: तभी मुझे लगा कि शिवप्रसाद की कहानियों में आनेवाली नारी के संदर्भ में जानकारी पाना महत्वपूर्ण साबित होगा कि उनकी कहानियों की नारियाँ किस प्रकार जीवन यापन करती हैं। वह पुरूष प्रधान संस्कृति के साथ उनके अन्याय-अत्याचार को अपना भाग्य मानती हैं या अन्याय के प्रति विद्रोहिनी बनती हैं यह जिज्ञासा मेरे मन मे निर्माण हुई। साथ ही उनके कथा साहित्य को पढ़ते समय यह भी जिज्ञासा मेरे मन में रही कि उनकी कहानियों की नारीयाँ स्वतंत्रता पाने के लिए इस व्यवस्था से झगड़ती हैं या नहीं? उनकी कहानियों की नारी परंपरावादी है या

विकसित साथ ही शिवप्रसाद सिंह जी का नारी के प्रति क्या दृष्टिकोन रहा होगा ? आदि जिज्ञासाओं की परिपूर्ति के लिए मैंने उनके 'कर्मनाशा की हार' और 'इन्हें भी इंतजार हैं' कहानी संग्रहों का अध्ययन करने के उपरांत एम्.फिल्. उपाधि के लिए "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी : कर्मनाशा की हार, और 'इन्हें भी इंतजार है' के परिप्रक्ष्य में" मेरे शोध कार्य का मुख्य विषय चुना।

शिवप्रसाद सिंह के 'कर्मनाशा की हार' और 'इन्हें भी इंतजार है' कहानी संग्रहों पर आज तक अध्ययन नहीं हुआ। उसी कमी पूर्ति के उद्देश्य हेतू यह विषय लेकर प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रचना की गयी है। उपर्युक्त विषय चयन करते समय शिवप्रसाद सिंह पर किए गए शोध कार्य की जाँच पड़ताल की। इसके अध्ययन उपरांत मुझे इस खोज में निम्नलिखित शोध-कार्यो का पता चला -

1. सर्वप्रथम कु. सुनिता आनंदराव कदम ने शिवाजी विश्वविद्यालय से एम. फिल. उपाधि हेतु 'गली आगे मुड़ती है' में छात्र अंदोलन : एक मूल्यांकन इस विषय पर 1995 में लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है।
2. कु. आडके संजय जी ने "अलग-अलग वैतरणी' उपन्यास का अध्ययन" इस विषय पर शिवाजी विश्वविद्यालय से 1995 में एम्. फिल्. उपाधि प्राप्त की है।
3. इसके साथ साताप्पा लहू चव्हाण जीने 2001 में एम्. फिल्. उपाधि हेतु शिवाजी विश्वविद्यालय में "डॉ. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज" इस विषय पर शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है।

उपयुर्क्त शोध-कार्य से अलग और मौलिक अनुसंधान हेतु मैंने 'शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी 'कर्मनाशा की हार' और 'इन्हें भी इंतजार हैं' के परिप्रेक्ष्य में' विषय का चयन किया।

अनुसंधान के आरंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हो गए।

1. शिवप्रसाद सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा रहा होगा?
2. शिवप्रसाद सिंह जी की कहानियों में कौन-कौनसी समस्याएँ देखने को मिलती हैं?
3. शिवप्रसाद सिंह नारी पात्रों के दु:ख को अपनी कहानियों में व्यक्त करने में कहाँ तक सफल हुए हैं?
4. क्या शिवप्रसाद सिंह नारी पात्रों के प्रति सुधारवादी या परंपरावादी नजर से देखते है?
5. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों की नारियाँ अपने अन्याय के खिलाफ आवाज उठाती है या वह अन्याय को विवशता मान उन्हें सहन करती है?

विवेच्य कहानियों के अध्ययन के पश्चात् उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित अध्यायों में विभाजित करके शोध-विषय का विवेचन विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत शिवप्रसाद सिंह के व्यक्तित्व का परिचय दिया है। इसमें उनकी जन्म तिथि, जन्म स्थान, माता-पिता, परिवार, शिक्षा, विवाह, संतान, रूची, प्रेरणा, साहित्यिक व्यक्तित्व को स्पष्ट करके उनके साहित्य संसार के बारे में जानकारी प्रस्तुत की है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

दवितीय अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में वस्तु-पक्ष"

प्रस्तुत अध्याय में कहानियों में वस्तु पक्ष का महत्व, शिवप्रसाद सिंह की कहानियो में ग्रामीण जीवन से संबंधित महानगरीय जीवन से संबंधित, नारी जीवन से संबंधित तथा शिक्षा से संबंधित वस्तु-पक्ष के अंतर्गत उनकी कहानियों का वस्तु परक

विवेचन किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी के विविध रूप"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विशेषता के आधार पर नारी के रूपों में परित्यक्त्या, शोषित, उपेक्षित, विद्रोही, शिक्षित, अनपढ़, स्वाभिमानी, मजदूरी करनेवाली धोखे का शिकार, संघर्षशील, दूसरों पर हावी होने वाली नारी तथा परिवार के आधार पर, माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका, सास, बेटी, भाभी, बहू आदि रूपों का विस्तृत रूप से विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित समस्या

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवाह विषयक समस्या, विधवा की समस्या, अवैध मातृत्व, भ्रुणहत्या से संबंधित समस्या, वेश्या की समस्या, निर्धनता से उत्पन्न समस्या, कुंठाग्रस्त जीवन की समस्या, प्रेम विवाह की समस्या आदि का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय : "शिवप्रसाद सिंह की कहानियाँ शिल्प के परिप्रेक्ष्य में"

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों के शिल्प का वैधानिक अध्ययन प्रस्तुत किया है। इसमें शिल्प का स्वरूप, महत्व, कथावस्तु, पात्र एवं भाषा शैली, उद्देश्य, शीर्षक आदि की सैंद्धांतिक जानकारी प्रस्तुत की है। तत्पश्चात् विवेच्य कहानियों का शिल्प के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार :

उपसंहार के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को दिया गया है।

अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दे दी है।

लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1. शिव प्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी : 'कर्मनाशा की हार' और 'इन्हें भी इंतजार है' के परिप्रेक्ष्य में" विषय को अध्ययन का केंद्र बिंदु मानकर इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से अनुसंधान पहली बार संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में शिवप्रसाद सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा वस्तुनिष्ठ रूप में प्रस्तुत किया है।
3. प्रस्तुत लघु प्रबंध में विवेच्य कहानियों का वस्तु तत्व के अनुसार विवेचन प्रस्तुत किया है।
4. विवेच्य कहानियों में नारी की संवेदना के स्तर पर विविध रूप का विस्तृत चित्रण किया गया है।
5. विवेच्य कहानियों में नारी की विविध समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।
6. प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन प्रस्तुत किया है।